पढ़ने को तकनीकी कार्य मानने के बजाए पाउलो फ्रेरे पढ़ने के कर्म को राजनैतिक और दुनिया को समझने के मानवीय कर्म के रूप में देखते हैं। इस लेख में वे बताते हैं कि दुनिया को समझना लिखित भाषा के सीखने से बहुत पहले ही आरंभ हो चुका होता है लेकिन लिखित भाषा को सीखना हमारे अहसासों को ज्यादा मूर्त रूप देता है।

पाउलो फ्रेरे

पठन कर्म का महत्त्व

पाउलो फ्रेरे

'पेडागॉजी ऑफ ऑप्रेस्ड', 'कल्चरल एक्शन फोर फ्रीडम', 'एज्युकेशन फोर कल्चरल कोन्शियसनेस' आदि पुस्तकों के लेखक और ब्राजील में जन्मे पाउलो फ्रेरे (1921-1997) की गणना उन बिरले शिक्षा दार्शनिकों में होती है जिनके शिक्षा चिन्तन से शैक्षिक विमर्श में प्रतिमानीय बदलाव आया।

पढ़ने के महत्त्व के बारे में लिखने के प्रयास के बारे में मुझे कुछ बतलाना होगा कि इसकी तैयारी मैंने कैसे की जिसकी वजह से आज मैं यहां उपस्थित हूं। कुछ बातें पहले इस पुस्तक को लिखने की प्रक्रिया के बारे में जिसके लिए पढ़ने की क्रिया की आलोचनात्मक समझ का होना जरूरी था। पढ़ना सिर्फ लिखित शब्द या भाषा का अर्थ खोलना नहीं है बल्कि पहले ज्ञान की दुनिया में प्रवेश करना और उसके साथ चलना पड़ता है। भाषा और यथार्थ एक-दूसरे से जीवंत रूप से जुड़े हुए हैं। किसी विषयवस्तु का आलोचनात्मक पठन करने के बाद अर्जित समझ में निहित होता है कि विषयवस्तु और संदर्भ के बीच संबंध का बोध हो गया है।

जब मैंने पढ़ने की क्रिया के महत्त्व के बारे में लिखना आरंभ किया तो मैं स्वयं के पढ़ने की आदत के उन अनिवार्य क्षणों को पुनः जीवंत करने के लिए उत्साहपूर्वक खिंच आया, जिनकी याददाश्त बचपन, किशोरावस्था, जवानी के सर्वाधिक दूरस्थ अनुभवों में मेरे पास सुरक्षित थी, जब पढ़ने की क्रिया की आलोचनात्मक समझ मुझ में एक आकार ग्रहण कर रही थी। इस पुस्तक को लिखते समय मैंने अपने और उन विभिन्न अवसरों के बीच, जब पढ़ने की क्रिया मेरे अनुभव का हिस्सा बनी, एक निरपेक्ष फासला कायम रखा है : प्रथम, संसार को पढ़ना, उस नन्हे संसार को

जिसमें मैं पला, बढ़ा। उसके बाद स्कूली शिक्षा के दौरान शब्द को पढ़ना लेकिन हमेशा शब्द-संसार को नहीं।

जहां तक मैं अपने सुदूर बचपन को याद कर सकता हूं, अपनी खास दुनिया जिसमें मैं विचरण करता था, को पढ़कर समझने का प्रयास करना मेरे लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण था। इस प्रयास के लिए अपने को समर्पित करते हुए और अनुभवों को लिखते हुए मैंने मसविदे को पुनर्निर्मित किया और पुनः जिया। तब मैं शब्दों को पढ़ भी नहीं सकता था। उस समय मैं अपने को रिसाइफ, ब्राजील के एक औसत घर में पाता हूं जहां मेरा जन्म हुआ था। यह घर पेड़ों से घिरा था। इनमें से कुछ पेड़ मेरे लिए इंसानों के समान थे, हमारे बीच आत्मीयता थी। उनकी छाया में मैं खेला, उनकी शाखाओं तक जो काफी नीचे तक झुकी हुई थीं, मैं पहुंचता और छोटे-छोटे खतरों को महसूस करता जिन्होंने मुझे और बड़े खतरे लेने और साहसिक कार्य करने के लिए तैयार किया। पुराना घर- इसके शयनकक्ष, हाल, अटारी, खुली छत (मेरी मां के पर्ण-संग्रह के लिए उपयुक्त जगह) पिछवाड़ा- यह सब मेरी आरंभिक (पहली) दुनिया थी। मैं इस दुनिया रेंगा, गड़गड़ाहट की, पहली बार खड़ा हुआ, पहली बार चलना सीखा, अपने पहले शब्द बोले। सच में, वह खास दुनिया मेरी बोधपरक गतिविधियों के मुक्त आंगन के रूप में आ उपस्थित हुई और इसलिए यही दुनिया मेरी पढ़ने की पहली दुनिया थी। इस संदर्भ के मसौदे, शब्द और अक्षर चीजों; घटनाओं, प्रतीकों की शृंखला के रूप में मूर्तिमान हो गए। इन्हें अन्तर्मन में लेते समय, मुझे अपने होने का अहसास हुआ और जितना अधिक मुझे अपने होने का अहसास हुआ, मेरी बोधगम्यता में वृद्धि हुई। मैंने चीजों, घटनाओं, वस्तुओं और प्रतीकों को अपने भाइयों, बहनों और माता-पिता के संबंध में प्रयोग करते हुए सीखा।

इस संदर्भ के मूल पाठों, शब्दों और अक्षरों ने चिड़ियों के गानों में मूर्त रूप ले लिया- तनागर, मक्खीमार, चिलबिल चिड़िया फूलों के गुच्छों के बीच नाचती हुई तेज हवाओं द्वारा उड़ा दी जाती थीं जो आंधी-तूफान आने की सूचना देतीं, बिजली की गड़गड़ाहट और चमक में : बारिश के पानी में जुगराफिया के खेल खेलता हुआ, झीलें बनाते हुए, टापू, नदियां और झरने बनाते हुए। उससे संदर्भित मूल पाठ, शब्द, अक्षर वायु की सीटियों में मूर्त हो गए, आकाश के बादलों, आकाश के रंगों और बादलों की गतिशीलता में आबद्ध हो गए : पर्ण समूह के रंगों में, पत्तियों की आकृतियों में, फूलों की खुशबू (गुलाब, चमेली), पेड़ के तनों में : फलों की छालों में अलग-अलग समय पर एक ही फल के बदलते रंग- आम का हरा रंग जब वह आकार ही ले रहा होता है, पूरा आम बनने के बाद उसका हरा रंग, उसी आम का हरा-पीला रंग पकने पर, ज्यादा पके आम पर लगे काले धब्बे- इन रंगों के बीच में संबंध, (फल विकसित हो रहा है, उसमें दखल देने पर उसका प्रतिरोध और उसका स्वाद)। इस समय यह मुमकिन था, स्वयं द्वारा करना और दूसरों को करते हुए देखना और मैं निचोड़ने, कुचलने की क्रिया का अर्थ जान गया।

इस दुनिया में जानवरों का भी बराबरी का हिस्सा था- उसी आत्मीयता से परिवार की बिल्लियां अपने को हमारे पैरों से रगड़ती थीं, अनुनय या गुस्से में उनकी मिमयाहट : मेरे पिता के बूढ़े, काले कुत्ते जोजी का द्वेषपूर्ण हास्य जब बिल्लियों में से एक उसके बहुत नजदीक चली जाती थी जहां वह खाना खा रहा होता था जो उसी का था। ऐसे मामलों में जोली का मूड़ उससे एकदम अलग होता था जब खेलते हुए पीछा करता था, पकड़ता था और एक बार उसने बहुत सारे ओपोसम (एक अमेरिकन जानवर) में से एक को मार डाला था जिन्होंने मेरी दादी के मोटे मुर्गे-मुर्गियों को गायब कर दिया था।

मेरी घनिष्ठ दुनिया से संबंधित एक हिस्सा था, मेरे बड़ों का भाषा संसार जिसमें वे अपने विश्वासों, रुचियों, पसंद और मूल्यों को अभिव्यक्त करते थे, जो मेरी दुनिया व्यापक संसार से जोड़ते थे जिसके अस्तित्व के बारे में मैं सोच भी नहीं सकता था।

उस खास दुनिया में जिसमें मैं विचरण करता था, को पढ़ने के अपने कर्म को समझने के लिए, अपने सुदूर बचपन को पुनः स्मृति में लाने के प्रयास में, मैंने उन अनुभवों को पुनर्निर्मित किया, पुनः जिया, उस समय जब मैं शब्दों को अभी पढ़ भी नहीं पाता था। और तब कुछ प्रकट हुआ जो मुझे इन प्रतिबिम्बों के सामान्य संदर्भ में प्रासंगिक लगता है : भूत-प्रेतों के प्रति मेरा डर। मेरे बचपन के दौरान बड़ों की बातचीत में भूत-प्रेत लगातार चर्चा का विषय रहते थे। अपने विभिन्न रूपों में प्रकट होने लिए भूत-प्रेतों को अंधेरे या धुंधलके की जरूरत होती थी- अपने अपराध के दर्द को विलाप में उड़ाते हुए, खिल्ली उड़ाते और हंसते हुए, आराधनाओं की मांग करते हुए; बताते हुए कि उनका पीपा कहां छिपा है। शायद मैं सात वर्ष का था, उस बस्ती की गलियां जहां मैं पैदा हुआ था गैस से रोशन की जाती थीं। रात होने पर शानदार दीपक, दीप जलाने वाले की जादुई छड़ी के लिए प्रस्तुत हो जाते थे। अपने घर के दरवाजे से मैं दीपक जलाने वाले की पतली-दुबली आकृति को देखा करता था जब वह एक दीपक से दूसरे दीपक की तरफ एक ताल में आगे बढ़ता था। उसके कंधे पर दीपक जलाने की छड़ी होती थी। रोशनी बहुत हल्की होती थी, हमारे घर के अन्दर की रोशनी से भी अधिक हल्की : परछाइयां रोशनी पर हावी होती थी बजाय इसके कि रोशनी परछाइयों को ओझल कर दे।

प्रेतात्माओं की शरारतों के लिए इससे अच्छा माहौल नहीं हो सकता था। मुझे वे रातें याद हैं जिनमें मैं अपने स्वयं के डरों से घिरा समय के गुजरने का इंतजार किया करता था कि रात खत्म हो, भोर की हल्की रोशनी पहुंचे और अपने साथ प्रातः काल की चिड़ियों के गीत

लाए। प्रातः काल के प्रकाश में मेरे रात के डर अनेक प्रकार के शोरों को पैना कर देते थे जो दिन के समय की चमक और चहल-पहल में खो जाते थे लेकिन रात की गहरी खामोशी में रहस्यमय ढंग से फिर साकार हो उठते थे। जैसे-जैसे मैं अपनी दुनिया से परिचित होता गया और जैसे-जैसे पढ़ने का मेरा ज्ञान और समझ बेहतर हुई, मेरा आतंक कम होता गया।

यहां यह जोड़ देना जरूरी है कि अपनी दुनिया को पढ़ना, जिसका मेरे लिए बुनियादी महत्त्व है, ने मुझे समय से पूर्व परिपक्व नहीं होने दिया- लड़के की वेशभूषा में एक बुद्धिवादी। लड़कपन की जिज्ञासा ने इसे विशृंखल नहीं किया, न ही अपनी दुनिया की मेरी समझ ने बाहरी दुनिया के लुभावने रहस्य के प्रति कोई नफरत पैदा की। इसमें मेरे माता-पिता ने मुझे हतोत्साहित करने की बजाय मेरी सहायता ही की। समृद्ध अनुभव के क्षणों में किसी वक्त मेरे माता-पिता ने अपनी घनिष्ठ दुनिया को समझने के लिए मुझे शब्द को पढ़ना सिखाया। अपनी खास दुनिया को पढ़ने की प्राकृतिक सहजता में से शब्द का अर्थ प्रवाहित होने लगा। यह कोई ऐसी चीज नहीं थी जो आरोपित की गई हो। अपने घर के पीछे के आंगन में आम के पेड़ों की छाया में मैंने जमीन पर पढ़ना और लिखना सीखा था- ये मेरी अपनी दुनिया के शब्द थे न कि मेरे माता-पिता के व्यापक संसार के। पृथ्वी मेरा ब्लैकबोर्ड थी और छड़ी मेरी चाक।

जब मैं यूनिस वासकेन्सेलो के निजी स्कूल में पहुंचा, मैं साक्षर हो चुका था। मैं यूनिस की हृदय से प्रशंसा करना चाहूंगा, जिसके कुछ समय पहले चले जाने पर मुझे गहरा दुःख हुआ था। यूनिस ने मेरे माता-पिता के काम को जारी रखा था और उसे गूढ़ बनाया था। उनके साथ शब्दों को, मुहावरों को, वाक्य को पढ़ना और दुनिया को पढ़ना- इन दोनों में कभी कोई अन्तराल नहीं था। उनके साथ शब्द को पढ़ने के मानी थे शब्द प्रसूत दुनिया को पढ़ना।

छात्र सीखने की प्रक्रिया का एक हिस्सा है जिसे पढ़ना-लिखना सीखना है जो जानने और सृजन करने का कार्य है।...उसे शिक्षक की मदद की जरूरत होती है, जैसा कि किसी शैक्षणिक स्थिति में होता है, इसका मतलब यह नहीं है कि शिक्षक की मदद छात्र की सृजनात्मकता को और लिखित भाषा के निर्माण करने की उसकी जिम्मेदारी को निष्क्रिय कर दे।

बहुत ज्यादा दिन नहीं हुए जब मैं भाव-विह्वल हो वह घर देखने गया जहां मैं पैदा हुआ था। उसी जमीन पर मैं खड़ा हुआ जहां मैं सबसे पहले खड़ा हुआ था, जिस पर मैं सबसे पहले चला था और जहां मैंने पढ़ना सीखा था। यह वही दुनिया थी जो मेरे पढ़ने के द्वारा मेरी समझ के सामने पहले उपस्थित हो गई थी। इसमें मैंने फिर अपने बचपन के कुछ पेड़ देखे। मैंने उन्हें बिना किसी कठिनाई के पहचान लिया। उनके मोटे तनों को जैसे मैंने अपनी चोली में भर लिया हो- बचपन में उसके युवा तनों को। तब मुझे धरती, पेड़ों और घर से प्रस्फुटित, जिसे मैं एक कोमल और शिष्ट विरह कहूंगा, ने मुझे सहजते हुए अपने आगोश में ले लिया था। मैं तृप्त होकर घर से विदा हुआ आनंद की उस भावना के साथ जैसे कोई अपने प्रिय से दोबारा मिला हो।

पुनः किशोर और युवा दिनों के अपने बचपन के अनुभव के मूल क्षणों को पढ़ने के प्रयास को जारी रखते हुए- वे क्षण जिनमें पढ़ने की क्रिया के महत्त्व की आलोचनात्मक समझ ने व्यावहारिक रूप लिया- मैं उस समय में वापस लौटना चाहूंगा जब मैं सैकेण्डरी स्कूल का छात्र था। वहां मुझे मूल पाठों की आलोचनात्मक व्याख्या करने का अनुभव प्राप्त हुआ जो मैं पुर्तगाली शिक्षक की मदद से कक्षा में पढ़ता था जो मुझे आज भी याद है। उस समय मात्र अभ्यास नहीं करवाए जाते थे, उद्देश्य होता था हमारे सामने जो पृष्ठ हैं उसे ध्यान में लेना, यांत्रिक रूप से उसे निगाह से निकालना और उदासीनतापूर्वक उसे उच्चारित करना बजाय उसे वास्तविक रूप से पढ़ना। वे लम्हे पारंपरिक अर्थ में पाठों को पढ़ने के नहीं थे बल्कि मूल पाठों को, जिसमें युवा शिक्षक जोस पेसोआ, के भी थे, हमारी धैर्यहीन खोज के प्रत्युत्तर में प्रस्तुत किए जाते थे।

कुछ समय बाद बीस वर्ष या कुछ अधिक उम्र के पुर्तगाली भाषा के प्रथम वर्ष के हाईस्कूल छात्रों के साथ शिक्षक के रूप में मैंने पढ़ने और लिखने के कर्म के महत्त्व को गहराई से अनुभव किया- जिसे अलग नहीं किया जा सकता। वाक्य-विषयक नियमों को मैंने कभी रेखाचित्रों में नहीं बांधा ताकि छात्र उन्हें पी जाए, खास क्रियाओं के बाद कारक

पर लागू होने वाले नियमों, लिंग प्रयोग और संख्या के नियमों, संक्षिप्तिकरण को भी नहीं। इसके विपरीत इस सबको बहु-आयामी और जीवंत तरीके से छात्रों की जिज्ञासा के समक्ष प्रस्तुत किया गया, इस तरह से कि वे मूल पाठों में इन चीजों को ढूंढ़ें, ये पाठ छात्रों के अपने भी हो सकते हैं या स्थापित लेखकों के भी लेकिन इस तरह के नहीं जो जड़ हों जैसा कि मैंने वर्णन किया। छात्रों को उस चीज के विवरण को यांत्रिक रूप से याद करने की जरूरत नहीं थी बल्कि उसमें निहित महत्त्व को सीखना था। उसके महत्त्व को सीखने के बाद ही वे जान सकते थे कि उसे कैसे याद किया जाए और कैसे प्रयोग किया जाए। किसी चीज के विवरण को यांत्रिक तरीके से याद करने से उस चीज के बारे में ज्ञान प्राप्त नहीं होता। इस कारण किसी वस्तु के विवरण की शुद्धता को ध्यान में रखते हुए मूल पाठ को पढ़ना। (एक वाक्य-विषयक नियम की तरह) और फिर उस विवरण को याद कर लेना, न तो वह वास्तविक पढ़ना है, न ही उस वस्तु का ज्ञान हो पाता है जिसके बारे में वह मूल पाठ है।

मेरा विश्वास है कि शिक्षकों का यह आग्रह कि छात्र एक सत्र में अनेकानेक पुस्तकें पढ़ें, हमारी पढ़ने के बारे में कभी-कभी जो गलतफहमी होती है, उससे उत्पन्न होता है। पूरी दुनिया में भ्रमण के बाद, ऐसा कुछ ही बार नहीं हुआ है कि जब युवा छात्रों ने मुझसे कहा कि उन्हें विस्तृत ग्रंथ-सूचियां से जूझना पड़ता है जिनमें से ज्यादातर को तो वास्तविक रूप से पढ़ने की बजाय चाट जाना पड़ता है या ''पाठ पढ़ने'' के पुराने अर्थ में अध्ययन करना पड़ता है, यह छात्रों को वैज्ञानिक प्रशिक्षण के नाम पर करना होता है और जिनके बारे में उन्हें 'पठन संक्षिप्तिकरण' के रूप में विवरण देना होता है। कुछ ग्रंथ-सूचियों में मैंने पढ़ा है कि अमुक पुस्तक के इस या उस अध्याय में विशिष्ट पृष्ठों को संदर्भित करते हुए लिखा है कि उन्हें पढ़ें : ''पृ. 15-37''।

मूल पाठों को बिना आत्मसात किए समझ बनाने और यांत्रिक तरीके से याद करने के लिए अधिक मात्रा में पढ़ने का आग्रह लिखित शब्द के चमत्कारी दृष्टिकोण को उजागर करता है- एक ऐसा दृष्टिकोण जिसे लांघना जरूरी है। दूसरी तरह से देखें तो यही दृष्टिकोण उस लेखक में पाया जाता है जो अपने काम की गुणवत्ता या उसकी कमी की संभावना इसमें देखता है कि उसने कितने पृष्ठ लिखे हैं। तो भी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों में से एक जिसे हम जानते हैं वह है- मार्क्स की ''फायरबाख की स्थापनाएं'' जो मात्र ढाई पृष्ठ में है।

दुनिया को पढ़ना, शब्द के पढ़ने के पहले घटित होता है और शब्द पढ़ने में निहित होता है लगातार दुनिया को पढ़ना।...शब्द से दुनिया की तरफ गतिशील रहना हमेशा होता रहता है; बोला गया शब्द भी हमारी दुनिया को पढ़ने की क्रिया में से प्रवाहित होता है।...शब्द को पढ़ना मात्र दुनिया को पढ़ने से पहले घटित नहीं होता बल्कि एक खास तरह के लिखने से होता है।

इसलिए कि जो मैं कह रहा हूं उस व्याख्या को गलत न समझा जाए, इस बात पर जोर देना महत्त्वपूर्ण है कि शब्द के प्रति चमत्कारी दृष्टिकोण की मेरी आलोचना का अभिप्राय यह नहीं है कि मैं उस दायित्व के प्रति जो यह सब शिक्षकों और छात्रों का है गैर-जिम्मेदाराना बात कह रहा हूं, मसलन, उनका दायित्व है कि किसी क्षेत्र के श्रेष्ठ साहित्य को गंभीरतापूर्वक पढ़ना ताकि मूल पाठ अपना स्वयं का हो जाए और बौद्धिक कृतियों का सृजन हो सके जिसके बिना शिक्षकों और छात्रों का क्रियाकलाप चलना संभव नहीं है।

लेकिन अब मैं पुर्तगाली भाषा के शिक्षक के रूप में अपने अनुभव के समृद्ध लम्हों की तरफ लौटता हूं : मुझे वह समय बहुत अच्छी तरह याद है जब मैंने गिलबर्टो फ्रेरे, लिंस दोरेगो, ग्रासिलियानो रामोस, योरगे अभादो के काम का विश्लेषण करने में बिताया था। मैं मूल पाठों को छात्रों के साथ पढ़ने के लिए घर से लाता था और उनकी भाषा के वाक्य-विषयक पहलुओं को जो सख्त मानदण्डों के आधार पर अच्छी रुचि प्रदर्शित करते थे, छात्रों को बताता था। उस विश्लेषण में मैं पुर्तगाल और ब्राजील में बोली जाने वाली पुर्तगाली भाषा के बीच खास अन्तरों को स्पष्ट करने के लिए अपनी टिप्पणियां जोड़ देता था।

वयस्कों को पढ़ना-लिखना सिखाने को मैं हमेशा एक राजनैतिक कार्य के रूप में देखता था, ज्ञान प्रदान करने का कार्य, इसलिए एक सृजनात्मक कार्य है। ऐसे कार्य में लगना मेरे लिए असंभव होता जिसमें स्वरों की ध्वनियों को यांत्रिक रूप से याद करना पड़े जैसे कि यह अभ्यास ''बा-बे-बि-बो-बु, ला-ले-लि-लो-लु''। न ही मैं सीखने को मात्र

शब्दों या अक्षरों के सीखने तक- मात्र पढ़ना और लिखना- सीमित कर सकता था, पढ़ाने की एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें शिक्षक सीखने वाले के खाली दिमाग में अपने शब्द भरता रहे। इसके विपरीत छात्र सीखने की प्रक्रिया का एक हिस्सा है जिसे पढ़ना-लिखना सीखना है जो जानने और सृजन करने का कार्य है। यह तथ्य कि उसे शिक्षक की मदद की जरूरत होती है, जैसा कि किसी शैक्षणिक स्थिति में होता है, इसका मतलब यह नहीं है कि शिक्षक की मदद छात्र की सृजनात्मकता को और लिखित भाषा के निर्माण करने की उसकी जिम्मेदारी को निष्क्रिय कर दे इसलिए कि उसे यह भाषा पढ़नी है।

उदाहरण के लिए, जब एक शिक्षक और एक सीखने वाला एक वस्तु को अपने हाथ में लेते हैं जैसा कि मैं अब कर रहा हूं दोनों उस वस्तु को महसूस करते हैं, महसूस की गई वस्तु को बोधगम्य बनाते हैं और शब्दों में अभिव्यक्त करने में सक्षम होते हैं कि महसूस की गई और बोधगम्य वस्तु क्या हैं। मेरी ही तरह, अनपढ़ व्यक्ति कलम को महसूस कर सकता है, उसका बोध उसे हो सकता है और कह सकता है कि कलम है।

मैं कलम को सिर्फ महसूस ही नहीं कर सकता, मात्र उसका बोध ही नहीं होता और कह ही नहीं सकता कि कलम है बल्कि लिख भी सकता हूं कि यह कलम है और परिणामतः पढ़ भी सकता हूं कि यह कलम है। पढ़ना और लिखना सीखने का मतलब है लिखित अभिव्यक्ति का सृजन और संयोजन करना जिसे बोलकर भी कहा जा सकता है। इस सबको शिक्षक, छात्र के लिए एक साथ नहीं रख सकता; यह तो छात्र का सृजनात्मक कार्य है।

मुझे इससे आगे उस सब में जाने की जरूरत नहीं है जिसे मैंने अलग-अलग समय पर वयस्कों को पढ़ना-लिखना सिखाने की जटिल प्रक्रिया में विकसित किया है। फिर भी मैं एक बिन्दु पर वापस लौटना चाहूंगा, जिसका उल्लेख मैंने इस पुस्तक में पढ़ने-लिखने की आलोचनात्मक समझ के लिए इसके महत्त्व को देखते हुए किसी और जगह किया है और नतीजतन उस परियोजना के लिए जिससे मेरा गहरा लगाव है- वयस्कों को पढ़ना-लिखना सिखाना।

दुनिया को पढ़ना, शब्द के पढ़ने के पहले घटित होता है और शब्द पढ़ने में निहित होता है लगातार दुनिया को पढ़ना। जैसा कि मैंने पहले सुझाया था, शब्द से दुनिया की तरफ गतिशील रहना हमेशा होता रहता है; बोला गया शब्द भी हमारी दुनिया को पढ़ने की क्रिया में से प्रवाहित होता है। एक प्रकार से हम और आगे जा सकते हैं और कह सकते हैं कि शब्द को पढ़ना मात्र दुनिया को पढ़ने से पहले घटित नहीं होता बल्कि एक खास तरह के लिखने से होता है या उसी को पुनः लिखने से होता है, अर्थात् सचेतन व्यवहृत कार्य द्वारा उसे आमूल रूपान्तरित करने से। मेरा विश्वास है बहु-आयामी गतिशीलता साक्षरता प्रक्रिया के केन्द्र में होती है।

इस कारण मेरा हमेशा आग्रह रहा है कि साक्षरता कार्यक्रम आयोजित करने के लिए प्रयोग किए गए शब्द जिसे मैं लोगों का ''शब्द ब्रह्मांड'' कहता हूं, से आते हैं, लोग जो सीख रहे हैं, अपनी वास्तविक भाषा बोल रहे हैं, अपनी चिंताओं, डरों, मांगों और सपनों को अभिव्यक्त कर रहे हैं। शब्द ऐसे प्रयोग करने चाहिएं जो लोगों की जिंदगी के अनुभव को प्रस्तुत करते हों न कि शिक्षक के अनुभव को। ब्रह्मांड के सर्वेक्षण से हमें लोगों के शब्द प्राप्त होते हैं जिनके गर्भ में दुनिया समाई होती है, शब्द जो लोगों द्वारा दुनिया को पढ़ने से प्राप्त होते हैं। तब हम शब्द लोगों को वापस दे देते हैं। जिसे मैं कहता हूं 'रूपान्तरित' (कोडिफिकेशन) भाषा में, यथार्थ परिस्थितियों की तस्वीरें पेश करते हुए। ईंट शब्द को, उदाहरण के लिए, मकान बनाते समय ईंट लगाने वालों के समूह को तस्वीर में दिखाते हुए प्रदर्शित किया जा सकता है। लोकप्रिय शब्द को लिखित रूप देने के पहले हम पारंपरिक तौर पर सीखने वालों को रूपान्तरित की गई परिस्थितियों के समूह द्वारा चुनौती देते हैं, इसलिए कि वे यांत्रिक रूप से याद करने की बजाय शब्द को समझेंगे। रूपांतरित करने या तस्वीरों में बदल दी गई परिस्थितियों को पढ़ने से सीखने वालों की संस्कृति के अर्थ की आलोचनात्मक समझ बनेगी और उन्हें यह समझ में आएगा कि मानवीय अभ्यास या कृत्य कैसे बिल्कुल परिवर्तित कर देता है। बुनियादी तौर पर यथार्थ परिस्थितियों की तस्वीरें लोगों को दुनिया की अपनी पूर्व व्याख्या पर पुनर्चिंतन करने का अवसर प्रदान करती है इसके पहले कि वे दुनिया को पढ़ना शुरू करें। यह पहली परिस्थिति का अधिक आलोचनात्मक पठन और दुनिया का कम आलोचनात्मक पठन उन्हें अपनी दरिद्रता को भाग्यवादी तरीके से नहीं जिसे वे कभी-कभी अन्याय को समझने में काम में लेते हैं, भिन्न रूप से समझने में मदद करता है।

इस प्रकार यथार्थ का आलोचनात्मक पठन चाहे वह साक्षर होने की प्रक्रिया में होता हो या नहीं और एकजुट और संगठित करने के राजनैतिक क्रियाकलापों से सीधा संबंधित हो अथवा नहीं, एन्टोनियो ग्राम्सी के शब्दों में ''आधिपत्य के विरुद्ध'' काम करने वाला औजार तो है ही।

सार रूप में कहें तो पढ़ने में आलोचनात्मक अवबोधन, व्याख्या और जो पढ़ा जाता है उसका पुनर्लेखन निहित होता है। ◆

(प्रकाशित अंश पाउलो फ्रेरे और डोनाल्डो की पुस्तक 'लिटरेसी : रीडिंग द वर्ड एण्ड दे वर्ल्ड' से लिया गया है।)

भाषान्तर : सुरेन्द्र कुशवाह